दलित शिक्षित युवा वर्ग : सामाजिक असमानता तथा शोषण

डॉ0 प्रमोद कुमार

भारत में दलित जातियों का सम्बन्ध आज उन 20 करोड़ से भी अधिक लोगों से है, जो हिन्दू समाज का अभिन्न अंग होने के बाद भी कुछ हिन्दू धर्म ग्रंथों के निर्देशों के कारण एक लम्बे समय तक बहुत अपमानित और शोषित जीवन व्यतीत करते रहे। वास्तव में दलित जातियों की समस्याओं का कारण भारत में जातियों का वह संस्तरण है जिसमें ब्राह्मण जातियों को सबसे पवित्र मानकर उन्हें विशेष अधिकार दिये गये, जबकि कुछ जातियों को अपवित्र मानकर उन्हें सभी तरह के अधिकारों से वंचित कर दिया गया। विभिन्न पुराणों और स्मृतियों में जिन लोगों को जन्म और पेशे के आधार पर सबसे अधिक पवित्र माना गया, उनके स्पर्श पर भी प्रतिबन्ध लगा दिया गया। इसी से भारतीय समाज में अस्पृश्यता जैसी गंभीर और अमानवीय समस्या पैदा हुई। मध्यकाल तक हिन्दू समाज इतना धर्मान्ध और अंधविश्वासी बन गया कि स्मृतियों में दिये गये नियमों के अनुसार अस्पृश्य जातियों को नगरों और गाँवों की मुख्य बस्ती से दूर रहने के लिए बाध्य किया जाने लगा। उन्हें सभी तरह की सामान्य सुविधाओं से भी वंचित कर दिया।